॥ श्रीः ॥

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

॥ श्री हयग्रीव – पटलम् ॥

जगद्गुरु प्रतिवादिभयङ्कर

स्वामी श्रीमद् अनन्ताचार्यजी महाराज

का

शताब्दी महोत्सव

प्रकाशक –

श्रीवेङ्कटेश देवस्थान

फनसवाड़ी, बम्बई–२.

प्रकाशक –

श्री वेङ्कटेश देवस्थान

फनसवाड़ी, बम्बई–२.

* * *

मुद्रक — श्रीमती दुर्गाबाई शास्त्री, मैनेजिंग डायरेक्टर,

भारती प्रिण्टिग प्रेस,

भारती भुवन, १५१, इमली बाजार,

इन्दौर – ४ (म.प्र.)।

* * *

© सर्वाधिकार सुरक्षित।

* * *

प्रथमावृत्ति,

कार्त्तिकी पूर्णिमा, सं. २०३०।

॥ श्रीः ॥

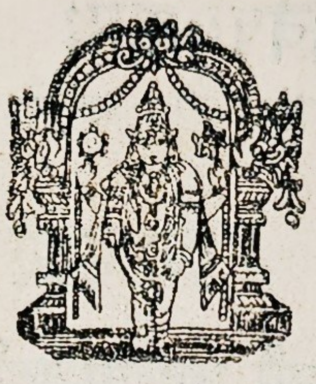

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

अथ

श्री हयग्रीव-पटलम्

॥ श्रीहयग्रीव-पटलम् ॥

विषयक्रमः

विषय — पृष्ठ

	विषय	पृष्ठ
	विषयक्रम	
	प्राक्कथन	[ग]
	प्र. भ. वै. वा. जगद्गुरु स्वामी अनन्ताचार्यजी का जीवन परिचय	[१]
	भूमिका	[९]
१	हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	१
२	हयग्रीवस्तोत्रम् [वेदान्तदेशिकाचार्यकृतम्]	९
३	हयग्रीवकवचम्	१७
४	हयग्रीवोपनिषत्	२३
५	हयग्रीवमूलमन्त्रस्तुतिः	३१
६	सङ्क्षिप्त आराधनविधिः [नीराजनञ्च]	३५

॥ श्रीः ॥

श्री वादिभीकरगुरवे नमः

प्राक्कथन

श्रीवैष्णववृन्द के हितार्थ श्री हयग्रीवोपासना का यह कल्प प्रतिवादि-भयङ्कर काञ्चीमठाधीश जगद्गुरु वैकुण्ठवासी स्वामी श्रीमद् अनन्ताचार्यजी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के पुनीत पर्व पर वेङ्कटेश देवस्थान, बम्बई के सञ्चालकों द्वारा भारती अनुसन्धानशाला, इन्दौर के विशिष्टाद्वैत विभाग के मनस्वी विद्वानों द्वारा सम्पादित कर प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तुत सङ्कलन में सर्वप्रथम भगवान् श्री लक्ष्मी–हयग्रीव के ध्यानस्वरूप विग्रह का चित्र शास्त्रोक्त आधार पर कल्पित कर साधक के अनु-

सन्धान में सुकरता के लिये दिया है। उसके बाद दिया हुआ भगवान् श्रीहयग्रीव का अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र हस्तलिखित पाण्डुलिपि से ग्रहण किया है; कारण, अद्यावधि प्रकाशित स्तोत्रावलियों में यह कहीं उपलब्ध नहीं है। इसकी पाण्डुलिपि श्री नागौरिया उत्तरतोताद्रिमठाधीश पूज्यपाद जगदाचार्य स्वामी केशवाचार्यजी के निजी संग्रह से उपलब्ध हुई है – उनकी इस कृपा के लिए सम्पादक मण्डल उनका ऋणी है। इसके बाद श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के स्तम्भ, कवितार्किककेशरी श्री वेदान्तदेशिकाचार्य कृत हयग्रीव स्तोत्र है जिसमें श्री हयग्रीव का बीजमन्त्र अन्तर्हित है। इसके बाद श्री हयग्रीव-कवच और उपनिषत् हैं। उपासना क्रम में कवच का अनुसन्धान आवश्यक है; इससे साधक को बल प्राप्त होता है, उससे अर्जित आत्मशक्ति से साधक आधिभौतिक एवं आधिदैविक व्यथा से सदा मुक्त रहता है। हयग्रीवोपनिषत् वैदिकवाङ्मय में सुप्रसिद्ध है और निर्णयसागरीय अष्टोत्तरशतोपनिषत्संग्रह

नामक ग्रन्थ में मुद्रित है। उसका आधार लेते हुए भी परम्परा से प्राप्त पाठ को ही मान्यता देते हुए सम्पादक मण्डल ने हयग्रीवोपनिषत् प्रस्तुत किया है। शेष स्तोत्र भी शुद्ध पाठ के साथ सङ्कलित किये गये हैं।

भूमिका में श्री हयग्रीवोपासना के विधिवत् अनुसन्धान से साधक को सफलता प्राप्ति की सहज कुञ्जी विद्वान् सम्पादकों की अनुपम देन है।

वर्त्तमान पीढ़ी के तरुण भक्तवृन्दों की परम पूज्य अनन्त श्री विभूषित वैकुण्ठवासी जगद्गुरु स्वामी अनन्ताचार्यजी महाराज के सुधन्य नाम-रूप तथा आदर्शों से प्रतीति और दिव्य अनुग्रह की उपलब्धि हो–इस दृष्टि से प्रारम्भ में श्रीचरण का चित्र प्रस्तुत है। महात्मा के वाक्य हैं–

देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना।
रूप विशेष नाम बिनु जाने। कर तल गत न परहिं पहिचाने॥

इस सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए साथ ही में पूज्यपाद स्वामीजी का जीवन परिचय भी दिया गया है । इस परम पुनीत जीवन-चरित्र के प्रकाशमय आदर्शों का संक्षिप्त परिचय भी मनस्वी, भावुक भक्तवृन्द के जीवन पथ को आलोकित करने में पूर्ण क्षम होगा ।

आशा है प्रस्तुत सङ्कलन भक्तजनोपयोगी सिद्ध होकर वर्चस्वी होने की कामना करने वाले साधक के लिए उसकी मनोरथपूर्त्ति का सफल साधन सिद्ध होगा ।

श्री वेङ्कटेश देवस्थान,
बम्बई - २
कार्तिकी पूर्णिमा
वि. सं. २०३०

वासुदेव सोमानी
अध्यक्ष
श्रीमदनन्ताचार्य शताब्दी
समारोह समिति ।

॥ श्री: ॥

काञ्ची प्रतिवादि-भयङ्कर
वैकुण्ठवासी श्रीमद्
अनन्ताचार्यजी महाराज
[गादी स्वामी]

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं,
श्रीकृष्णसूरिपदपङ्कज-भृङ्गराजम् ।
श्रीरङ्गवेङ्कटगुरूत्तमलब्धबोधं
भक्त्या भजामि गुरुवर्यमनन्तसूरिम् ॥

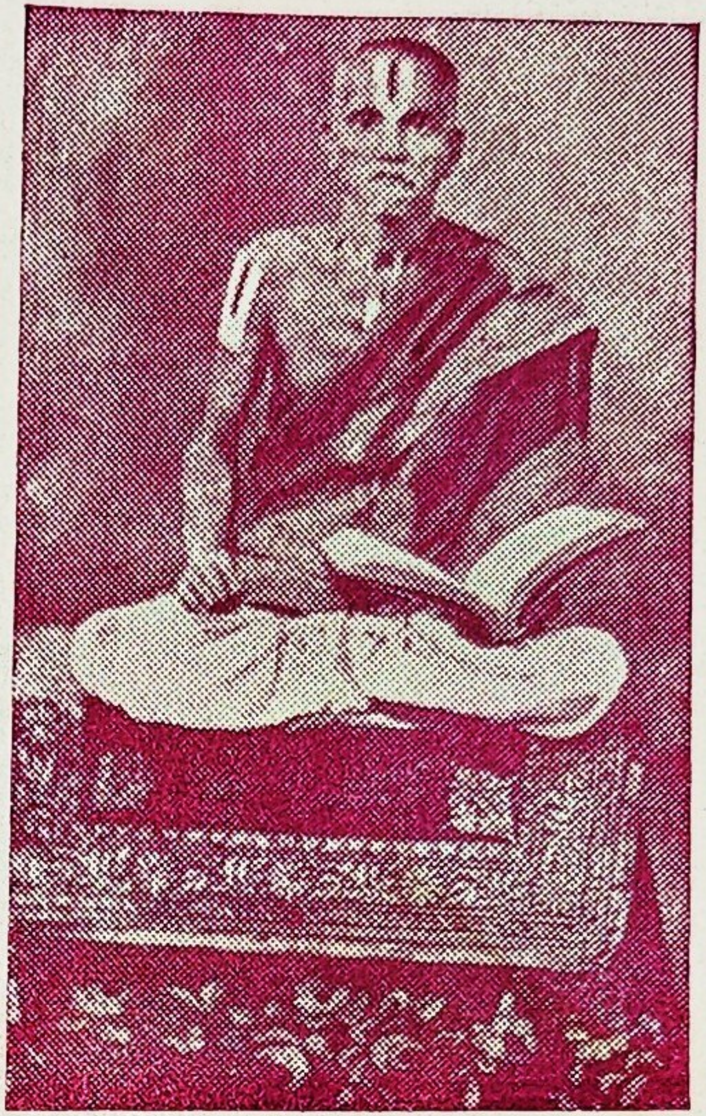

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

काञ्ची-मठाधीश्वर प्रतिवादि-भयङ्कर अनन्त श्री विभूषित

वैकुण्ठवासी श्रीमत् स्वामी अनन्ताचार्यजी महाराज

का

* जीवन परिचय *

प्रातःस्मरणीय पुण्यश्लोक प्रतिवादिभयङ्कर काञ्ची मठाधीश जगद्गुरु वैकुण्ठवासी श्रीमदनन्ताचार्यजी महाराज विक्रमीय संवत् १९३० फाल्गुन कृष्णा ४ शनिवार के दिन अपने मातामह के

यहां श्रीतिरुपति में प्रादुर्भूत हुए थे। श्री विष्णुकाञ्ची में आपकी वंशपरम्परा आपस्तम्बीय तैत्तिरीय शाखा के भृगुवंशीय श्रीवत्सगोत्र के नाम से सुप्रसिद्ध है। आपके पिताश्री का नाम श्रीकृष्णसूरि एवं पूज्य माताजी का नाम श्रीपेरुन्देवी था। आप भगवान् हयग्रीव के आराधक, मन्त्रराज के जापक एवं अस्त्रराज के दृढ उपासक थे। आपने वेदवेदाङ्ग, साहित्य-दर्शन-न्याय-मीमांसा तथा व्याकरण का परिपूर्ण ज्ञान ११ वर्ष की अवस्था से आरम्भ कर २१ वर्ष की अवस्था तक परिपूर्ण कर लिया था। आपने श्री पुष्कर क्षेत्र में ११ वर्ष की अवस्था में अपने पूज्य पितृचरण के द्वारा ही

साम्प्रदायिकी दीक्षा प्राप्त की थी। आप अप्रतिम विद्वान्, सच्चे साधक एवं उदार चरित्र महापुरुष थे। आप श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के सर्वाङ्गीण प्रसार के साथ, मानव-चरित्र के पुनर्जागरण के प्रति अत्यन्त जागरूक थे। सम्प्रदाय के प्रति मन में अविचल श्रद्धा के साथ साथ आपकी चेतोवृत्ति लोकरञ्जनार्थ अतीव उदारतापूर्ण थी। इससे, जहाँ सम्प्रदायानुयायी आपके सिद्धान्त-प्रतिपादक उपदेश से अपनी शरीर-वाङ्मनोगत त्रिविधा श्रद्धा को बलवती बनाने में समर्थ होते थे, वहाँ इतर सामान्य मानव, अपने प्रति निर्दिष्ट मार्ग-दर्शन के हेतु आपकी विलक्षण प्रतिभा से चमत्कृत हो, अपनी मानसी कुण्ठा से सर्वथा

मुक्तिलाभ कर लेते थे। यही हेतु था कि सम्प्रदायानुयायी शिष्य-परम्परा, सिद्धान्त के प्रतिपादन में निरत विद्वत्समुदाय, देशी, विदेशी, सनातन मतावलम्बी, तथा इतर मतानुयायी भी आपकी प्रतिभा का निश्चल हृदय से स्वागत करते थे।

आचार्य चरण ने भगवान् हयग्रीव, मन्त्रराज एवं अस्त्रराज सुदर्शन की आराधना के बल अद्भुत शक्ति तथा अतुलनीय प्रतिभा अर्जित कर वि. सं. १९५१ में अपने सम्प्रदाय को दृढ करने तथा सनातन धर्म का प्रसार करने के लिए दक्षिण से उत्तर भारत तथा पूर्व से पश्चिम तक यात्रा की। स्थान-स्थान पर आपने अपने अकाट्य

तर्कों से शास्त्रार्थ में सर्वत्र विजय पाई और आपकी शिष्य परम्परा दिनोंदिन बढ़ती गई। आपने अखिल भारतीय श्री वैष्णव सम्मेलन को सुप्रतिष्ठित किया। आपने श्रीरामानुज सम्प्रदाय के रहस्य ग्रन्थों को प्रकाशित किया तथा तदर्थ सुदर्शन मुद्रणालय की काञ्ची में स्थापना की।

इस मुद्रणालय के द्वारा पूज्यपाद स्वामीजी महाराज ने तर्क-व्याकरण-तन्त्र तथा वेदान्त एवं पाञ्चरात्र आगम के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किये। साथ ही संस्कृत के प्रसारार्थ 'मञ्जुभाषिणी' नामक संस्कृत पत्रिका, 'वन-मालिका' और ब्रह्मविद्या नामक पत्रिकाएं प्रकाशित कर आपने विद्वानों को

उपकृत किया। आपने श्रीकाञ्चीपुरी में 'वेदान्तवैजयन्ती' नामक संस्कृत पाठशाला की भी स्थापना की।

मठ-मन्दिर, रामानुज कोट तथा दिव्यदेश के निर्माण तथा जीर्णोद्धार में आपका प्रशंसनीय सहयोग रहा। सबसे विशिष्ट, अपने तप, त्याग तथा वैदुष्य के प्रतीक स्वरूप श्री वेङ्कटेश देवस्थान, फनसवाडी, बम्बई के दिव्यदेश का निर्माण कार्य आपका सदा विद्यमान रहने वाला कीर्त्तिशरीर है। अपनी समस्त सम्पदा भगवच्चरणों में समर्पण कर आपने देवस्थान की सुव्यवस्था के लिए न्यास (ट्रस्ट) की स्थापना कर दी और उसे सञ्चालन का भार सौंप दिया जो उनकी महत्ता एवं उदारता

का परमोज्ज्वल निदर्शन अद्यापि सम्प्रदाय की सेवा कर रहा है।

सब पीठों से कहीं अधिक आपकी शिष्य परम्परा है जिसमें प्रमुख सोमानी परिवार तथा गनेडीवाल परिवार तथा सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई का परिवार है। विद्वज्जनों में काशी के मठाधीश स्वामी देवनायकाचार्यजी; जगदाचार्य श्रीमद् विष्वक्सेनाचार्य त्रिदण्डी स्वामी बक्सर, लक्ष्मणाचार्यजी अमझरा, पं. द्वारकाप्रसादजी चतुर्वेदी, श्रीरामप्रतापजी शास्त्री प्रभृति प्रमुख हैं।

आपकी प्रकृति परम सात्त्विक, स्वभाव सौम्य, सुमधुर एवं शिष्यवत्सल था। आप शरणागति तत्त्व के प्रचारक,

मानवता के सच्चे आदर्श थे। स्वसिद्धान्त के पालन में दृढ होते हुए भी वें सङ्कीर्णता से अस्पृष्ट थे। सम्प्रदाय तथा सनातन धर्म के प्रचार एवं प्रसार में अपने समग्र जीवन को लगाते उनका शरीर क्रमशः क्षीण होने लगा; अन्ततो गत्वा भागीरथी एवं सरयू के संगम स्थल छपरा में वि.सं. १९९३ श्रावण शुक्ल ३, मंगलवार (१६-६-१९३६) के दिन वैकुण्ठलोक सिधार कर वे श्रीमन्नारायण के नित्यकैङ्कर्य निरत हो गये।

॥ श्री रामानुजार्यदिव्याज्ञा वर्धतामभिवर्धताम् ॥

॥ भूमिका ॥

पाञ्चरात्र उपासना पद्धति में श्री हयग्रीव की उपासना का परम महत्त्व है। श्री हयग्रीव भगवान् विष्णु के ही अवतार हैं। प्रजापति ब्रह्मदेव ने देवों को अतुल शक्ति प्रदान करने की इच्छा से तथा लोकोपकारार्थ अपने चतुर्मुख से वेदों की सृष्टि की और इस अमूल्य निधि को देवताओं को सौंप दी। वेद में प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान के बल देववृन्द अतुल शक्तिशाली तथा वैभवशाली बन गये। इस बात को दानव सह न सके और देवों की शक्ति के स्रोत वेदों से उन्हें वञ्चित करने की दानवों ने ठानी। अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये इस काम का बीड़ा मधु-कैटभ नामक युगलबन्धुओं ने उठाया और समस्त वेदराशि का अपहरण कर वे उसे पाताल ले गये। इस हानि से हतप्रभ देवगण प्रजापति के पास पहुँचे और अपनी गाथा उन्होंने ब्रह्माजी को सुनाई। प्रजापति ने उन्हें भगवान् विष्णु के शरण जाने की सलाह दी। परम कारुणिक भगवान् विष्णु ने

देवताओं की आर्त्त दशा को देख उनके लिए वेदराशि को दानवों से छीन कर ला देने का आश्वासन दिया। तदनुसार भगवान् विष्णु ने शङ्ख-चक्र धारण किये, अश्वमुख स्वरूप को अपनाया और मधुकैटभों का संहार कर वेदराशि को लाकर देवताओं को अनुग्रह रूप में प्रदान किया।

भगवान् विष्णु का यह हयग्रीव अवतार ऋक्, यजुष् और साम रूप माना जाता है; प्रणव ही उनकी वाक् है और वे इस रूप में विद्या के अधिष्ठाता कहे जाते हैं। श्री हयग्रीव की उपासना से साधक अप्रतिम विद्वान्, वागीश्वर बन जाता है तथा ब्रह्मविद्या का अधिकारी हो जाता है। बुद्धि की प्रखरता, मेधाशक्ति की अभिवृद्धि तथा ज्ञान-विज्ञान के सम्पादन के लिए श्री हयग्रीव की उपासना एक अमोघ साधन है।

कहा जाता है कि एक बार तिरुवहीन्द्र में श्रीमन्निगमान्त-महादेशिकाचार्य ओषधाद्रि पर बिष्णुवाहन श्री गरुड़ की उपासना कर रहे थे। गरुडमन्त्र का साङ्गोपाङ्ग पुरश्चरण ज्यों ही उनका समाप्त हुआ, भगवान्

गरुड स्वयं उनके सम्मुख प्रत्यक्ष हुए और उन्होंने देशिकाचार्य को मन्त्रोपदेश कर हयग्रीव की उपासना करने का आदेश दिया। तदनुसार वेदान्तदेशिक ने हयग्रीव मन्त्र का श्रद्धापूर्वक समाहित चित्त से पुरश्चरण किया। उनकी उपासना से प्रसन्न हो श्री हयग्रीव भगवान् ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिये और प्रसाद रूप में अपने दिव्य लालामृत का पान कराया, जिसके फलस्वरूप देशिकाचार्य को दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ और समस्त विद्याएं स्वयं प्रादुर्भूत होकर उनकी सन्निधि में अपनी उपस्थिति प्रस्तुत करने लगीं। इसी प्रकार पण्डितेन्द्र यतिवर वादिराज को भी विद्याविभव श्री हयग्रीव की उपासना के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ था। पौराणिक आधार पर यह प्रसिद्ध है कि हयग्रीव ने ही आदिकाल में सर्वप्रथम प्रपञ्च की सृष्टि कर ब्रह्मदेव को वेदमन्त्रों का उपदेश दिया था। भगवती सरस्वती तथा रुद्र ने श्री हयग्रीव की आराधना करके ही क्रमशः वाग्देवी तथा सर्वज्ञ पद को अधिगत किया था।

भगवान् हयग्रीव की उपासना भक्तिपूर्वक की जाय तो सुगम तथा आशु फलप्रद है। जिस किसी भी व्यक्ति को, विशेषकर मन्दमति के लिए, अपनी विद्या की उज्ज्वलता, अभिवृद्धि, स्मरण शक्ति की दृढता की कामना हो उसे नियमपूर्वक श्री हयग्रीव की उपासना करनी चाहिये। परमदयालु श्री वेदान्तदेशिकाचार्य ने हयग्रीव स्तोत्र की रचना की और उसके ३२वें श्लोक[1] में भगवान् हयग्रीव के ध्यान स्वरूप का वर्णन किया है। तदनुसार "श्वेतकमल के बीच विराजमान, एक हाथ में व्याख्यामुद्रा, दूसरे में श्रीकोश, अन्य दो हाथों में शङ्ख-चक्र धारण किये हुये लक्ष्मीसमेत श्री हयग्रीव" का ध्यान कर, श्री हयग्रीव भगवान् के प्राणप्रतिष्ठित विग्रह पर अथवा चित्र पर श्वेतसुगन्धी पुष्प या कमल, गन्ध-तुलसी समर्पण कर, धूप-दीप-नैवेद्य[2] प्रस्तुत

---

१. देखो यहीं पृष्ठ १६।

२. मुख्यतः भगवान् हयग्रीव की उपासना में उबली हुई चने की दाल में गुड या चीनी मिलाकर नैवेद्य अर्पण करने का विधान है।

कर श्रीहयग्रीवस्तोत्र का अनुसन्धान करना चाहिये। किसी भी आराध्यदेव की साङ्गोपाङ्ग सफल उपासना के हेतु पाँच अङ्ग बताये गये हैं – १. मूलमन्त्र (मनु), २. अष्टोत्तरशत (अथवा सहस्र) नाम, ३. स्तोत्र, ४. कवच, तथा ५. पञ्जर या तत्सम्बन्धी उपनिषत्। ये ही पाँच अंग पञ्च पटल के नाम से प्रसिद्ध हैं।

उपासना का सामान्य क्रम – पञ्चपटल विधान के अनुसार साधक स्नान द्वारा शुचि होकर, रेशमी वस्त्र, कमलाक्ष की माला धारण कर, भगवत्सन्निधि में उपस्थित हो, तिलक धारणकर, भगवान् श्री हयग्रीव को प्रणाम कर उनकी षोडशोपचार अर्चा पुरुषसूक्त द्वारा सम्पन्न कर, श्री हयग्रीव मन्त्र का अष्टोत्तरशत (१०८ बार) जप करे, तथा किये हुए जप को भगवान् के दक्षिण हस्त में समर्पण करे। तत्पश्चात् बताई हुई विधि के अनुसार पहिले अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र का पाठ करे। प्रारम्भ में दिये हुए संकल्प के पश्चात् न्यास-ध्यान विधिवत् कर, एकाग्र मन से शतनाम का पाठ करे। उसके पश्चात् श्री हयग्रीव-स्तोत्र का पाठ करे जिसकी रचना सिद्धपुरुष

वेदान्तदेशिकाचार्यजी ने स्वयं की है । इस स्तोत्र में हयग्रीवमन्त्र समप्ररूप से अन्तर्निहित है, अत एव इस स्तोत्र के अनुसन्धान से हयग्रीव मन्त्र की सिद्धि होती है । इसके बाद ओङ्कार अच्युत स्वरूप हयग्रीवकवच का अनुसन्धान करे — पाठ के समय अपने अंग की रक्षा की प्रार्थना तत्तद्रूप से भगवान् श्री हयग्रीव से करे। कवच का अनुसन्धान परम आवश्यक है — इसके द्वारा की हुई उपासना की रक्षा होती है, आत्मरक्षा होती है, तथा विरोधी तत्त्व की प्रतिक्रिया होती है और आत्मबल की अभिवृद्धि होती है । इसके बल भूतप्रेतादि उपासक के समक्ष निर्बल हो जाते हैं । अन्त में हयग्रीवोपनिषद् का पाठ कर अपने क्रियाकलाप को भगवदर्पण कर दैनिक उपासना समाप्त करे । यदि कारणवश साधक पञ्च-पटलोपासना में अक्षम हो तो सङ्क्षेप से उपासना करने पर मूलमंत्र का १०८ बार जप कर प्रस्तुत सङ्कलन के पृष्ठ ३१ पर दी हुई "श्री हयग्रीवमूलमन्त्र स्तुति" का अनुसन्धान कर भगवदर्पण करे । परन्तु यह संक्षिप्तक्रम अगतिक दशा में ही अपनाया जाय, न कि आलस्य से या प्रमादवश ।

लक्ष्य-सिद्धि के लिए साधक को सर्वप्रथम "ऋग्यजुःसाम°" इस मूलमन्त्र का अयुत[1] (१००,०००) बार जप कर पुरश्चरण विधिवत् करना चाहिये। स्तोत्ररूप मालामन्त्रों की सिद्धि ५००० पाठ करने से होती है। कवच की साधना चार बार अष्टोत्तरशतपाठ के अनुसन्धान से होती है। यह सामान्यरूप से निर्देश किया गया है। वस्तुतः मन्त्रोपासना के क्रम को साधक ने अपने गुरुचरणों से परम्परानुसार ग्रहण कर साधना करनी चाहिये, तब ही श्री हयग्रीवोपासना जैसे दिव्यकल्प सिद्ध होते हैं तथा ऐहिक एवं पारलौकिक इष्ट सिद्धि के साधन बनते हैं।

उत्तर भारत में श्री हयग्रीवोपासना का उपदेश विरल जनों को ही उपलब्ध है, परन्तु यह उपासना अव्यर्थ है, जितने भाष्यकार, तेजस्वी पीठाधीश जगद्गुरु महाचार्य हुए, उन्हें भगवान् हयग्रीव का अनुग्रह प्राप्त था और उसी या उस जैसी दिव्य अनन्य उपासना के प्रबल आश्रय से उन्होंने

---

१. शतसहस्रमयुतम्। अयुत शब्द का अर्थ १०,००० भी होता है। [पृष्ठ ४].

कीर्त्तिशाली स्थायी महिमा अर्जित की थी और निश्चय आज का साधक भी उसी तरह भगवदनुग्रह का पात्र हो सकता है । आज के युग में खान पान की अमर्यादितता तथा धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के अद्भुत प्रभाव से युवकजन विद्योपार्जन में निर्बल तथा क्षीण-मेधा (अल्प स्मरण शक्तिवाले) एवं मन्दप्रतिभा के दीख पड़ते हैं, उन्हें अनायास विद्याबल, मेधाशक्ति एवं अद्भुत प्रतिभा अर्जित करने के लिये श्री हयग्रीवोपासना जैसे अमोघ भव्यकल्प का अनुसन्धान कर अपने पूर्वजों की भाँति तेजस्वी एवं यशस्वी बनना चाहिये । विद्यार्थी जगत् तथा बुद्धिजीवी वर्ग के लिए यह उपासना परम उपादेय है ।

जिन भावुक साधकों के पास नितान्त समयसङ्कोच हो उनके लाभार्थ संक्षिप्त आराधन विधि बताई गई है । तदनुसार साधक सङ्कल्पपूर्वक श्रीहयग्रीव की उपासना के आरम्भ में ध्यान श्लोकों का पाठ करते हुए भगवान् के स्वरूप का एकाग्र मन से चिन्तन करे और गन्धपुष्प समर्पण कर प्रणाम

करे । तत्पश्चात् मूलमन्त्र का १०८ बार जप करे और अन्त में पुनः इन्हीं ध्यान श्लोकों को पढ़कर, की हुई अपनी आराधना को भगवान् श्री हयग्रीव के चरणों में समर्पण करे, तथा

हृदब्जसदनं वाजिवदनं सत्प्रमोदनम् ।

नमाम्यनुदिनं बुद्धिशोधनं पापभेदनम् ॥ यह कह कर प्रणाम करे ।

तत्पश्चात् "**अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।**

अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु ॥ कहते हुए आत्मनिवेदन कर दैनिक आराधना समाप्त करे ।"

सुरेन्द्रनाथ शास्त्री

प्रधान सम्पादक –

विशिष्टाद्वैत विभाग,

भारती रिसर्च इन्स्टिट्यूट, इन्दौर ।

अथ हयग्रीवाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्रीलक्ष्मीहयग्रीवाय नमः ॥

ॐ अस्य श्रीहयग्रीव-स्तोत्र-मन्त्रस्य सङ्कर्षणऋषिः अनुष्टुप् च्छन्दः श्रीहयग्रीवो देवता ऋं बीजं नमः शक्तिः विद्यार्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ सङ्कर्षण ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । ॐ श्रीहयग्रीवदेवतायै नमः हृदये । ऋं बीजाय नमः गुह्ये । नमः शक्तये नमः पादयोः । विद्यार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ इत्यङ्गन्यासः ॥

अथ करन्यासः ॥ ॐ ऋग्यजुःसामरूपाय अंगुष्ठाभ्यां नमः । वेदाहरणकर्मणे तर्जनीभ्यां नमः । प्रणवोद्गीथवचसे मध्यमाभ्यां नमः । महाश्वशिरसे नमः अनामिकाभ्यां नमः । महाश्वशिरसे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥

ॐ ऋग्यजुःसामरूपाय हृदयाय नमः वेदाहरणकर्मणे शिरसे स्वाहा। प्रणवोद्गीथवचसे शिखायै वषट्। महाश्वशिरसे नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। महाश्वशिरसे कवचाय हुम्। नमः अस्त्राय फट्॥ इति हृदयादिन्यासः॥

[ध्यानम्]

वन्दे पूरित-चन्द्र-मण्डलगतं श्वेतारविन्दासनं
मन्दाकिन्यमृताब्धिकुन्दकुमुदक्षीरेन्दुहासं हरिम्।
मुद्रापुस्तकशङ्खचक्रविलसच्छ्रीमद्भुजामण्डितं
नित्यं निर्मल भारतीपरिमलं विश्वेशमश्वाननम्॥१॥

ॐ ऋग्यजुःसामरूपाय वेदाहरणकर्मणे ।
प्रणवोद्गीथवचसे महाश्वशिरसे नमः ॥
इति मन्त्रः ॥ अयुतञ्जपेत् ॥ [विद्याप्रधानोऽयम्]

अथ स्तोत्रम्

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ॥ १ ॥

हयग्रीवो महाविष्णुः केशवो मधुसूदनः ।
गोविन्दः पुण्डरीकाक्षो विष्णुर्विश्वम्भरो हरिः ॥ २ ॥

आदित्यः सर्ववागीशः सर्वाधारः सनातनः ।
निराधारो निराकारो निराशीर्निरुपद्रवः ॥ ३ ॥
निरञ्जनो निष्कलङ्को नित्यतृप्तो निरामयः ।
चिदानन्दमयः साक्षी शरण्यः शुभदायकः ॥ ४ ॥
श्रीमाँल्लोकत्रयाधीशः शिवः सारस्वतप्रदः ।
वेदोद्धर्त्ता वेदनिधिर्वेदवेद्यः पुरातनः ॥ ५ ॥
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिः परात्परः ।
परमात्मा परं ज्योतिः परेशः पारगः परः ॥ ६ ॥
सकलोपनिषद्वेद्यो निष्कलः सर्वशास्त्रवित् ।
अक्षमाला-ज्ञानमुद्रायुक्तहस्तो वरप्रदः ॥ ७ ॥

पुराणः पुरुषः श्रेष्ठः शरण्यः परमेश्वरः ।
शान्तो दान्तो जितक्रोधो जितमित्रो जगन्मयः ॥ ८ ॥

जरामृत्युहरो जीवो जयदो जाड्यनाशनः ।
जयाश्रयो जयस्तुत्यो याजकप्रियकृद्विभुः ॥ ९ ॥

विमलो विश्वरूपश्च विश्वगोप्ता विधिस्तुतः ।
विधिविष्णुशिवस्तुत्यः शान्तिदः शान्तिकारकः ॥ १० ॥

श्रियः प्रदः श्रुतिमयः श्रेयसाम्पतिरीश्वरः ।
अच्युतोऽनन्तरूपश्च प्राणदः पृथिवीपतिः ॥ ११ ॥

अव्यक्तो व्यक्तरूपश्च सर्वसाक्षी तमोपहा ।
अज्ञाननाशको ज्ञानी पूर्णचन्द्रसमप्रभः ॥ १२ ॥

ज्ञानदो वाक्पतिर्योगी योगीशः सर्वकामदः ।
योगारूढो महापुण्यः पुण्यकीर्तिरमित्रहा ॥ १३ ॥
विश्वसाक्षी चिदाकारः परमानन्दकारकः ।
महायोगी महामौनी मुनीशः श्रेयसान्निधिः ॥ १४ ॥
हंसः परमहंसश्च विश्वगोप्ता विराट् स्वराट् ।
शुद्धस्फटिकसङ्काशो जटामण्डलसंयुतः ॥ १५ ॥
आदिमध्यान्तरहितः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
प्रणवोद्गीथरूपश्च वेदाहरणकर्मकृत ॥ १६ ॥
नाम्नामष्टोत्तरशतं हयग्रीवस्य यः पठेत् ।
स सर्ववेदवेदाङ्गशास्त्राणाम्पारगः कविः ॥ १७ ॥

इदमष्टोत्तरशतं नित्यं मूढोऽपि यः पठेत् ।
वाचस्पतिसमो बुद्ध्या सर्वविद्याविशारदः ॥ १८ ॥

महदैश्वर्यमाप्नोति कलत्राणि च पुत्रकान् ।
नश्यन्ति सकला रोगा अन्ते हरिपुरं व्रजेत् ॥ १९ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

अथ हयग्रीव-स्तोत्रम्

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ॥१॥

स्वतःसिद्धं शुद्धस्फटिकमणिभूभृत्प्रतिभटं
सुधासध्रीचीभिर्द्युतिभिरवदातत्रिभुवनम् ।
अनन्तैस्त्रय्यन्तैरनुविदितहेषाहलहलं
हताशेषावद्यं हयवदनमीडीमहि महः ॥२॥

प्राची सन्ध्या काचिदन्तर्निशायाः प्रज्ञादृष्टेरञ्जनश्रीरपूर्वा ।
वक्त्री वेदान् भातु मे वाजिवक्त्रा वागीशाख्या वासुदेवस्य मूर्त्तिः ॥३॥

विशुद्धविज्ञानघनस्वरूपं विज्ञानविश्राणनबद्धदीक्षम् ।
दयानिधिं देहभृतां शरण्यं देवं हयग्रीवमहं प्रपद्ये ॥४॥

समाहारं साम्नां प्रतिपदमृचां धाम यजुषां
लयः प्रत्यूहानां लहरिविततिर्बोधजलधेः ।
कथा दर्पक्षुभ्यत्कथककुलकोलाहलभवं
हरत्वन्तर्ध्वान्तं हयवदनहेषाहलहलः ॥५॥

अपौरुषेयैरपि वाक्प्रपञ्चैरद्यापि ते भूतिमदृष्टपाराम् ।
स्तुवन्नहं मुग्ध इति त्वयैव कारुण्यतो नाथ कटाक्षणीयः ॥६॥

दाक्षिण्यरम्या गिरिशस्य मूर्त्तिर्देवी सरोजासनधर्म्मपत्नी ।
व्यासादयोऽपि व्यपदेश्यवाचः स्फुरन्ति सर्वे तव शक्तिलेशैः ॥७॥
मन्दोऽभविष्यन्नियतं विरिञ्चिर्वाचां निधेर्वञ्चितभागधेयः ।
दैत्यापनीतान् दययैव भूयोऽप्यध्यापयिष्यो निगमान्न चेत्त्वम् ॥८॥
वितर्कदोलां व्यवधूय सत्त्वे बृहस्पतिं वर्त्तयसे यतस्त्वम् ।
तेनैव देव त्रिदशेश्वराणामस्पृष्टदोलायितमाधिराज्यम् ॥९॥
अग्नौ समिद्धार्चिषि सप्ततन्तोरातस्थिवान्मन्त्रमयं शरीरम् ।
अखण्डसारैर्हविषां प्रदानैराप्यायनं व्योम्न सतां विधित्से ॥१०॥
यन्मूलमीदृक्प्रतिभाति तत्त्वं या मूलमाम्नायमहाद्रुमाणाम् ।
तत्त्वेन जानन्ति विशुद्धसत्त्वास्तामक्षरामक्षरमातृकां ते ॥११॥

अव्याकृताद्व्याकृतवानसि त्वं नामानि रूपाणि च यानि पूर्वम् ।
शंसन्ति तेषां चरमां प्रतिष्ठां वागीश्वर त्वां त्वदुपज्ञवाचः ॥१२॥

मुग्धेन्दुनिष्यन्दविलोभनीयां मूर्त्तिं तवानन्दसुधाप्रसूतिम् ।
विपश्चितश्चेतसि भावयन्ते वेलामुदारामिव दुग्धसिन्धोः ॥१३॥

मनोगतं पश्यति यः सदा त्वां मनीषिणां मानसराजहंसम् ।
स्वयं पुरोभागविवादभाजः किं कुर्वते तस्य गिरो यथाहम् ॥१४॥

अपि क्षणार्द्धं कलयन्ति ये त्वामाप्लावयन्तं विशदैर्मयूखैः ।
वाचां प्रवाहैरनिवारितैस्ते मन्दाकिनीं मन्दयितुं क्षमन्ते ॥१५॥

स्वामिन् ! भवद्ध्यानसुधाभिषेकाद्वहन्ति धन्याः पुलकानुबन्धम् ।
अलक्षिते क्वापि निरूढमूलमङ्गेष्विवानन्दथुमङ्कुरन्तम् ॥१६॥

स्वामिन् ! प्रतीचा हृदयेन धन्यास्त्वद्ध्यानचन्द्रोदयवर्द्धमानम् ।
अमान्तमानन्दपयोधिमन्तः पयोभिरक्ष्णां परिवाहयन्ति ॥१७॥

स्वैरानुभावास्त्वदधीनभावाः समृद्ध[1]वीर्यास्त्वदनुग्रहेण ।
विपश्चितो नाथ तरन्ति मायां वैहारिकीं मोहनपिच्छिकां ते ॥१८॥

प्राङ्निर्मितानां तपसां विपाकाः[2] प्रत्यग्रनिःश्रेयससम्पदो मे ।
समेधिषीरँस्तव पादपद्मे सङ्कल्पचिन्तामणयः प्रणामाः ॥१९॥

विलुप्तमूर्धन्यलिपिक्रमाणां सुरेन्द्रचूडापदलालितानाम् ।
त्वदंघ्रिराजीवरजःकणानां भूयान् प्रसादो मयि नाथ भूयात् ॥२०॥

परिस्फुरन्नूपुरचित्रभानुप्रकाशनिर्धूततमोऽनुषङ्गाम् ।
पदद्वयीं ते परिचिन्महेऽन्तः प्रबोधराजीवविभातसन्ध्याम् ॥२१॥

---

१. संरुद्ध – इति पाठभेदः । २. विपाकात् – इति पाठभेदः ।

त्वत्किङ्करालङ्करणोचितानां त्वयैव कल्पान्तरपालितानाम् ।
मञ्जुप्रणादं मणिनुपूरं ते मञ्जूषिकां वेदगिरां प्रतीमः ॥२२॥

सञ्चिन्तयामि प्रतिभादशास्थान्¹ सन्धुक्षयन्तं समयप्रदीपान् ।
विज्ञानकल्पद्रुमपल्लवाभं व्याख्यानमुद्रामधुरं करं ते ॥२३॥

चित्ते करोमि स्फुरिताक्षमालं सव्येतरं नाथ करं त्वदीयम् ।
ज्ञानामृतोदञ्चनलालसानां लीलाघटीयन्त्रमिवाश्रितानाम् ॥२४॥

प्रबोधसिन्धोररुणैः प्रकाशैः प्रवालसङ्घातमिवोद्वहन्तम् ।
विभावये देव सपुस्तकं ते वामं करं दक्षिणमाश्रितानाम् ॥२५॥

तमांसि भित्वा विशदैर्मयूखैः सम्प्रीणयन्तं विदुषश्चकोरान् ।
निशामये त्वां नवपुण्डरीके शरद्घने चन्द्रमिव स्फुरन्तम् ॥२६॥

---

¹ "⁰-भातशास्त्रात्"-इति पाठान्तरम् ।

दिशन्तु मे देव सदा त्वदीया दयातरङ्गानुचराः कटाक्षाः ।
श्रोत्रेषु पुंसाममृतं क्षरन्तीं सरस्वतीं संश्रितकामधेनुम् ॥२७॥

विशेषवित्पारिषदेषु नाथ विदग्धगोष्ठीसमराङ्गणेषु ।
जिगीषतो मे कवितार्किकेन्द्रान् जिह्वाग्रसिंहासनमभ्युपेयाः ॥२८॥

त्वां चिन्तयँस्त्वन्मयतां प्रपन्नस्त्वामुद्गृणन् शब्दमयेन धाम्ना ।
स्वामिन् ! समाजेषु समेधिषीयस्स्वच्छन्दवादाहवबद्धशूरः ॥२९॥

नानाविधानामगतिः कलानां न चापि तीर्थेषु कृतावतारः ।
ध्रुवं तवानाथपरिग्रहाया नवं नवं पात्रमहं दयायाः ॥३०॥

अकम्पनीयान्यपनीतिभेदैरलंकृषीरन् हृदयं मदीयम् ।
शङ्काकलङ्कापगमोज्ज्वलानि तत्त्वानि सम्यञ्चि तव प्रसादात् ॥३१॥

व्याख्यामुद्रां करसरसिजैः पुस्तकं शङ्खचक्रे
बिभ्रद्भिन्नस्फटिकरुचिरे पुण्डरीके निषण्णः ।
अम्लानश्रीरमृतविशदैरंशुभिः प्लावयन्मा-
माविर्भूयादनघमहिमा मानसे वागधीशः ॥३२॥

वागर्थसिद्धिहेतोः पठत हयग्रीवसंस्तुतिं भक्त्या ।
कवितार्किककेसरिणा वेङ्कटनाथेन विरचितामेताम् ॥३३॥

इति श्रीकवितार्किकसिंहस्य सर्वतन्त्रस्वतन्त्रस्य श्रीमद्वेङ्कट-
नाथस्य वेदान्तदेशिकाचार्यस्य कृतिषु
श्रीहयग्रीवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

॥ श्रीः ॥

❁ अथ हयग्रीव-कवचम् ❁

॥ श्री हयग्रीवाय नमः ॥

अस्य श्रीहयग्रीवकवच-महामन्त्रस्य हयग्रीव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहयग्रीवः परमात्मा देवता, ॐ श्रीं (ह्रीं) वागीश्वराय नमः इति बीजम्, ॐ क्लीं विद्याधराय नमः इति शक्तिः, ॐ सौं वेदनिधये नमः इति कीलकम्, ॐ नमो हयग्रीवाय शुक्लवर्णाय विद्यामूर्तये ज्ञानमूर्तये ओङ्कारायाच्युताय ब्रह्मविद्याप्रदाय स्वाहा ।

(ध्यानम्)

कलाशाम्बुधिसङ्काशं कमलायतलोचनम् ।
कलानिधिकृतावासं कर्णिकान्तरवासिनम् ॥१॥

ज्ञानमुद्राक्षवलयं शङ्खचक्रलसत्करम् ।
भूषाकिरणसन्दोह - विराजितदिगन्तरम् ॥२॥

वक्त्राब्जनिर्गतोद्दाम-वाणीसन्तानशोभितम् ।
देवतासार्वभौमं तं ध्यायेदिष्टार्थसिद्धये ॥३॥

[अथ कवचम्]

हयग्रीवः शिरः पातु ललाटं चन्द्रमध्यगः ।
शास्त्रदृष्टिर्दृशौ पातु शब्दब्रह्मात्मकः श्रुती ॥४॥

घ्राणं गन्धात्मकः पातु वदनं यज्ञसम्भवः ।
जिह्वां वागीश्वरः पातु मुकुन्दो दन्तसंहतीः ॥५॥
ओष्ठं ब्रह्मात्मकः पातु पातु नारायणोऽधरम् ।
शिवात्मा चिबुकं पातु कपोलौ कमलाप्रभुः ॥६॥
विद्यात्मा पीठकं पातु कण्ठं नादात्मको मम ।
भुजौ चतुर्भुजः पातु करौ दैत्येन्द्रमर्दनः ॥७॥
ज्ञानात्मा हृदयं पातु विश्वात्मा तु कुचद्वयम् ।
मध्यमं पातु सर्वात्मा पातु पीताम्बरः कटिम् ॥८॥
कुक्षिं कुक्षिस्थविश्वो मे बलिभङ्गो वलित्रयम् ।
नाभिं मे पद्मनाभोऽव्याद् गुह्यं गुह्यार्थबोधकृत् ॥९॥

ऊरू दामोदरः पातु जानुनी मधुसूदनः ।
पातु जङ्घे महाविष्णुः, गुल्फौ पातु जनार्दनः ॥१०॥

पादौ त्रिविक्रमः पातु पातु पादाङ्गुलीर्हरिः ।
सर्वाङ्गं सर्वगः पातु पातु रोमाणि केशवः ॥११॥

धातून्नाडीगतः पातु भार्यां लक्ष्मीपतिर्मम ।
पुत्रान् विश्वकुटुम्बी मे पातु बन्धून् सुरेश्वरः ॥१२॥

मित्रं मित्रात्मकः पातु वह्न्यात्मा शत्रुसंहतेः ।
प्राणान् वाय्वात्मकः पातु क्षेत्रं विश्वम्भरात्मकः ॥१३॥

वरुणात्मा रसान् पातु व्योमात्मा हृद्गुहान्तरम् ।
दिवारात्रं हृषीकेशः पातु सर्वं जगद्गुरुः ॥१४॥

विषमे सङ्कटे चैव पातु क्षेमङ्करो मम ।
सच्चिदानन्दरूपो मे ज्ञानं रक्षतु सर्वदा ॥१५॥

प्राच्यां रक्षतु सर्वात्मा आग्नेय्यां ज्ञानदीपकः ।
याम्यां बोधप्रदः पातु नैऋत्यां चिद्घनप्रभः ॥१६॥

विद्यानिधिस्तु वारुण्यां वायव्यां चिन्मयोऽवतु ।
कौबेर्यां वित्तदः पातु ऐशान्यां च जगद्गुरुः ॥१७॥

ऊर्ध्वं पातु जगत्स्वामी पात्वधस्तात्परात्परः ।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वखिलनायकः ॥१८॥

एवं न्यस्तशरीरोऽसौ साक्षाद्वागीश्वरो भवेत् ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सर्वशास्त्रप्रवक्तृताम् ॥१९॥

लभते नात्र सन्देहो हयग्रीवप्रसादतः ।
इतीदं कीर्तितं दिव्यं कवचं देवपूजितम् ॥२०॥

इत्याथर्वणवेदे मन्त्रखण्डे पूर्वसंहितायां
हयग्रीवकवचं समाप्तम् ॥

॥ श्रीः ॥

॥ अथ हयग्रीवोपनिषत् ॥

॥ श्रीमते हयग्रीवाय नमः ॥

स्वज्ञोऽपि यत्प्रसादेन ज्ञानं तत्फलमाप्नुयात् ।
सोऽयं हयास्यो भगवान् हृदि मे भातु सर्वदा ॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

नारदो ब्रह्माणमुपसमेत्योवाचाधीहि भगवन् ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां ययाऽचिरात्सर्वपापं व्यपोह्य ब्रह्मविद्यां लब्ध्वैश्वर्यवान्भवति ।

ब्रह्मोवाच

हयग्रीवदैवत्यान्मन्त्रान्यो वेद स श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणानि वेद ।
स सर्वैश्वर्यवान्भवति । त एते मन्त्राः ।

विश्वोत्तीर्णस्वरूपाय चिन्मयानन्दरूपिणे ।
तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय स्वाहा स्वाहा नमः ॥१॥

ऋग्यजुःसामरूपाय वेदाहरणकर्मणे ।
प्रणवोद्गीथवपुषे महाश्वशिरसे नमः स्वाहा स्वाहा नमः ॥२॥

उद्गीथ प्रणवोद्गीथ सर्ववागीश्वरेश्वर ।
सर्ववेदमयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय स्वाहा स्वाहा नमः ॥३॥

ब्रह्मात्रिरविसवितृभार्गवा ऋषयः । गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुब्छन्दांसि । श्रीमान् हयग्रीवः परमात्मेति देवता, ह्सौमिति बीजम् , सोऽहमिति शक्तिः, ह्सौमिति कीलकम् , भोगमोक्षयोर्विनियोगः । अकारोकारमकारैरङ्गन्यासः ।

तद्यथा–

ॐ अकाराय नमः – इति शिरसि ।

ॐ उकाराय नमः – इति मुखे ।

ॐ मकाराय नमः – इति हृदये ।

ॐ अकाराय नमः – इति गुह्ये ।

ॐ उकाराय नमः – इति पादयोः ।

ॐ मकाराय नमः – इति सर्वाङ्गे ।

[ध्यानम्]

शङ्खचक्रमहामुद्रापुस्तकाढ्यं चतुर्भुजम् ।
सम्पूर्णचन्द्रसङ्काशं हयग्रीवमुपास्महे ॥

ॐ श्रीमिति द्वे अक्षरे । ह्सौयित्येकाक्षरम् । ॐ नमो भगवत इति सप्ताक्षराणि । हयग्रीवायेति पञ्चाक्षराणि । विष्णव इति त्र्यक्षराणि । मह्यं मेधां प्रज्ञामिति षडक्षराणि । प्रयच्छ स्वाहेति पञ्चाक्षराणि । हयग्रीवस्य तुरीयो भवति ॥४॥

ॐ श्रीमिति द्वे अक्षरे । ह्सौमित्येकाक्षरम् । एमैमैमिति त्रीण्यक्षराणि । क्लीं क्लीमिति द्वे अक्षरे । सौः सौरिति द्वे अक्षरे । ह्रीमित्येकाक्षरम् । ॐ नमो भगवते इति सप्ताक्षराणि । मह्यं मेधां

प्रज्ञामिति षडक्षराणि । प्रयच्छ स्वाहेति पञ्चाक्षराणि । पञ्चमी मनुभवति ॥ ५ ॥

हयग्रीवैकाक्षरेण ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि । ब्रह्मा महेश्वराय, महेश्वरः सङ्कर्षणाय, सङ्कर्षणो नारदाय, नारदो व्यासाय, व्यासो लोकेभ्यः प्रायच्छदिति । हकारोंसकारोमकारों त्रयमेकस्वरूपं भवति । ह्सौं बीजाक्षरं भवति । बीजाक्षरेण ह्सौंरूपेण तज्जापकानां सम्पत्सारस्वतौ भवतः । तत्स्वरूपज्ञानां वैदेही मुक्तिश्च भवति । दिक्पालानां राज्ञां नागानां किन्नराणामधिपतिर्भवति । हयग्रीवैकाक्षरजपशीलाज्ञया सूर्यादयः स्वतः स्वस्वकर्मणि प्रवर्तन्ते । सर्वेषां बीजानां हयग्रीवैकाक्षर-बीजमनुत्तमं मन्त्रराजात्मकं भवति । ह्सौं हयग्रीवस्वरूपो भवति ।

अमृतं कुरु कुरु स्वाहा तज्जापकानां वाक्सिद्धिः श्रीसिद्धिरष्टाङ्गयोग-सिद्धिश्च भवति। ह्सौं सकलसाम्राज्येन सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। तानेतान्मन्त्रान् यो वेद अपवित्रः पवित्रो भवति। अब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवति। अगम्यागमनात्पूतो भवति। पतितसम्भाषणात्पूतो भवति। ब्रह्महत्यादिपातकैर्मुक्तो भवति। गृहं गृहपतिरिव देही देहान्ते परमात्मानं प्रविशति। प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म, तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मीति महावाक्यैः प्रतिपादितमर्थं त एते मन्त्राः प्रतिपादयन्ति। स्वरव्यञ्जनभेदेन द्विधा एते। अथानुमन्त्राञ्जपति।

यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा।
चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्व स्विदस्याः परमं जगाम॥ १॥

गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ॥ २ ॥

ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः ।
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेदिति च वाग्रसः ॥ ३ ॥

ससर्परीरमतिं बाधमाना बृहन्मिमाय जमदग्निदत्ता ।
आसूर्यस्य दुरिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्यम् ॥ ४ ॥

य इमां ब्रह्मविद्यामेकादश्यां पठेद्धयग्रीवप्रभावेण महापुरुषो भवति । स जीवन्मुक्तो भवति । ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्व-

निराकरणं धारयिता भूयासं, कर्णयोः श्रुतं माच्योढ्वं ममामुष्य ॐ इत्युपनिषत् ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ स्वस्ति
न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति
नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः ॥ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हरिः ॐ तत्सत् ॥

इति श्रीहयग्रीवोपनिषत् ॥

॥ श्रीः ॥

॥ अथ श्रीहयग्रीव - मूलमन्त्रस्तुतिः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं जगन्नाथ लक्ष्मीकान्त परात्पर ।
नमो वाचं पुरश्चक्रे विद्याराजाय विष्णवे ॥ १ ॥

ॐकारोद्गीथरूपाय ऋग्यजुःसाममूर्त्तये ।
नमोऽस्तु देवदेवाय वाञ्छितार्थं प्रयच्छ मे ॥ २ ॥

अज्ञानतिमिरं छिन्धि ज्ञानमाशु प्रयच्छ मे ।
देहि मे सम्पदं देव हयशीर्ष नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

भूतप्रेतपिशाचादीन् छिन्धि देव जनार्दन ।
ज्वरादीन् सकलान् रोगान् नाशयाभ्युदयं कुरु ॥ ४ ॥

दारिद्र्यं सकलं छिन्धि कुरु सौभाग्यभाजनम् ।
शत्रून् नाशय मे देव हयग्रीव नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

मेधां विद्यां बलं सम्पदं पुत्रपौत्रकान् ।
देहि मे देवदेवेश हयग्रीव नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

कर्कोटकमुखान् सर्पान् सविषान् विलयं नय ।
अमृतं कुरु मां देव हयग्रीव नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

स्त्रीवश्यं राजवश्यञ्च जनवश्यं परात्पर ।
कुरु देवाङ्गनावृन्द-सेव्यमानपदाम्बुज ॥ ८ ॥

हंसाय परमेशाय चन्द्रमण्डलवासिने ।
नमो हयोत्तमाङ्गाय वाञ्छितार्थप्रदायिने ॥ ९ ॥

ऋग्यजुःसामरूपाय ऋताय महसे नमः ।
ऋक्षेशबिम्बमध्यस्थ-राजीवासनभाजिने ॥ १० ॥
वेदवेदान्तवेद्याय वेदाहरणकर्मणे ।
वेदावहमहामोह-ध्वंसिने ब्रह्मणे नमः ॥ ११ ॥
प्रज्ञाप्रदायिने नित्यं भजतां भावितात्मनाम् ।
प्रणवोद्गीथवचसे प्रणतिं प्रतिपादय ॥ १२ ॥
मन्दारकुन्दस्फटिक - महातिचारुवर्चसे ।
मनीषाप्रददेवाय महाश्वशिरसे नमः ॥ १३ ॥
इति द्वादशमन्त्रैश्च नमस्कृत्य जनार्दनम् ।
प्रसन्नवदनः प्राह पाराशर्यं तपोनिधिः[१] ॥ १४ ॥

---

१. नारदो व्यासं प्राहेति श्रुतिः ।

प्राची सन्ध्या काचिदन्तर्निशायाः
प्रज्ञादृष्टेरञ्जनश्रीरपूर्वा ।
वक्तुर्वेदान् भातु मे वाजिवक्त्र-
वागीशाख्या वासुदेवस्य मूर्त्तिः ॥ १५ ॥

निर्मलज्ञानसन्दोहं ध्वान्तध्वंसनकर्मठम् ।
नमामि तुरगग्रीवं हरिं सारस्वतप्रदम् ॥ १६ ॥

॥ इति ॥

॥ संक्षिप्त आराधनविधिः ॥

॥ ॐ श्री हयग्रीवाय नमः ॥

सङ्कल्प :—मम सकलेप्सितसिद्ध्यर्थं श्रीलक्ष्मीहयग्रीवस्य वरप्रसादावाप्तये जपे विनियोगः ।

[ध्यानम्]

वन्दे तुरङ्गवदनं शशिबिम्बसंस्थं
चन्द्रावदातममृतात्मकरैः समन्तात् ।
अण्डान्तरं बहिरपि प्रतिभासयन्तं
शङ्खाक्षपुस्तकसुबोधयुताब्जबाहुम् ॥

नस्तो मुखादपि निरन्तरमुद्गिरन्तं
विद्याःअशेषत उताब्जभवेशमुख्यैः ।
संसेव्यमानमतिभक्तिभरावनम्रैर्-
लक्ष्म्याऽमृतेन सततं परिषिच्यमानम् ॥

[मूलमन्त्रः] — ह्रां हयग्रीवाय नमः ।

यथाशक्ति कृतेनानेनाराधनेन भगवान् श्री लक्ष्मीहयग्रीवः प्रीयतां न मम ॥

श्री वैंकटेश देवस्थान, बम्बई

के

अन्य प्रकाशन

१. जगद्गुरु प्रतिवादि भयङ्कर वै. वा. स्वामी अनन्ताचार्यजी महाराज का सचित्र, सङ्क्षिप्त जीवनचरित्र (हिन्दी)

श्री गजाधर सोमानी

२. A Life-Sketch of His holiness P. B. Swāmi Shri Anantāchāryaji (अंग्रेजी)

By G. D. SOMANI

३. अनन्त श्रीविभूषित प्र. भ. स्वामी
श्री अनन्ताचार्यजी महाराज का "सुप्रभातम्,
प्रपत्ति और मङ्गलाशासनम्" —
जगदाचार्य त्रिदण्डी स्वामी श्रीविष्वक्सेनाचार्य रचित
— हिन्दी अनुवाद सहित

४. श्रीमद्भगवद्गीता [विष्णुसहस्रनाम समेत] ।
प्र. भ. स्वामीजी के जीवन-परिचय सहित

५. श्री हयग्रीव पटलम् विस्तृत भूमिका समेत
प्र. भ. स्वामीजी के जीवन-परिचय सहित
सम्पादक — डॉ. सुरेन्द्रनाथ शास्त्री

६. श्रीविष्णुसहस्रनाम (न्यास - ध्यान सहित)
प्र. भ. स्वामीजी के जीवन परिचय सहित

प्राप्ति–स्थान

श्रीवेङ्कटेश देवस्थान
फनसवाड़ी, बम्बई–२.

भारती पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
भारती भुवन,
१५१, इमली बाजार,
इन्दौर–४ (म. प्र.)